राजस्थान में औषधीय पादपों की खेती

*डॉ. योगेश कुमार सबल

शोध सारंश

भारतवर्ष का लगभग 38 प्रतिशत भूभाग शुष्क एवं अर्धशुष्क है जिसमें परम्परागत बहुउपयोगी एवं औषधीय वनस्पतियों की बहुतायत है। हमारे देश में प्रचलित औषधीय पौधे की 7500 प्रजातियों में से 800 प्रजातियाँ दवाई उधोग में काम आती है जिनमें से 120 औषधियों का वृहद उत्पादन एवं विष्वणन होता है। औषधीय प्रजातियों की कुल आवश्यकता का केवल 25 प्रतिशत ही कृषि द्वारा उत्पादित किया जाता है एवं शेष को प्राकृतिक स्त्रोतों जैसे पहाड़ों, वनों, चरागाहों, परत, भूमियों एवं खेत के खरपतवारों से ही एकत्रित किया जाता है। प्राकृतिक स्थानों मे इस वनस्पतियों की सभ्याव्यता देश के शुष्क एंव अर्धशुष्क राजस्थान में सर्वाधिक है। अतः गुणी वैध जन एवं अन्य उत्पादक कई दशकों से इन औषधीय पादपों को एकत्र करते रहें है।

Key words: राजस्थान, पांरपरिक उपयोग, सर्वेक्षण, थार रेगिस्तान, जातीय औषधीय पादप

परिचय–

औषधीय पौधों के उपयोग की भारत की एक समृद्ध, सबसे पुरानी और विविधता से परिपूर्ण सांस्कृतिक परंपरा है। पौधे और पौधों से बने हुए पदार्थ भारत में अतिप्राचीन काल से पारंपरिक रुप से उपयोग किये जा रहे हैं। पौधों की चिकित्सा शक्ति के कई वर्णन ऋगवेद (4000–1500 ईसा पूर्व), अथर्ववेद (1500 ईसा पूर्व), उपनिषद (1000 ईसा पूर्व) एवं महाभारत तथा पुराणों (700–400 ईसा पूर्व), चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता–औषधीय पौधों के दो महत्वपूर्ण सारांश (1000–600 ईसा पूर्व) में किया गया है। यूनानियों एवं मुसलमानों के आक्रमण के बाद पौधों पर आधारित चिकित्सा पद्यति पर बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ा। बौद्ध धर्म के उद्भव के बाद प्राचीन भारत में पौधों से बनी औषधियों के अध्ययन को बहुत प्रोत्साहन मिला। वर्तमान में, कई औषधीय पद्यतियां जैसे आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी, होम्योपैथी, तिब्बती, आदिवासी दवाइयां एवं लोक भेषज आदि मिलकर भारतीय भेशज पद्यति (ISM-Indian Systems of Medicines) के रूप में भारत में अपनाई जाती हैं। औषधीय पौधों के समूह में 8000 से ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं। भारत के उच्च फूल वाले पौधों की प्रजातियो में से लगभग 50 प्रतिशत को औषधीय पौधे माना जाता है। औषधीय पौधे अधिकांष ग्रामीण लोगों द्वारा उनके प्राथमिक उपचार की आवष्यकता के लिए स्व सहायता के रूप में उपयोग किये जाते हैं। हाल के वर्षों में वानस्पतिक औषधियों तथा सौंदर्य प्रसाधनों की मांग वैष्विक रूप में बहुत बढ़ी है। इस कारण देश में व देश के बाहर पौध सामग्री के व्यापार में बहुत वृद्धि हुई है।

पौधे के कई भागों जैसे जड़ें, छाल, लकड़ी, तना और पूरा पौधा वानस्पतिक औषधि के रूप में कई तरह की दवाइयां और संबंधित उत्पाद बनाने में काम आते हैं। परिणाम स्वरूप कई प्रजातियों की विनाशकारी कटाई कर पूरे पौधे को उखाड़ दिया जाता है। अतिकटाई से प्रकृति में कई प्रजातियों के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है। राजस्थान में औषधीय पादपों का अध्ययन काफी समय से किया जा रहा है किन्तु राजस्थान के औषधीय क्षेत्र के

सीकर जिले में जहां औषधीय पादप बहुयात में पाये जाते हैं, ग्रामीण आधुनिक चिकित्सा पद्वति की अपेक्षा परंपरागत चिकित्सा पद्वति पर निर्भर रहते है। औषधीय पादप का ज्ञान ग्रामीण समुदाय में परपंरागत रूप से एक पीढी से दूसरी पीढी में हंस्तांरित होता रहा है वहॉ शोध की आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र–

राजस्थान राज्य भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित है। इसकी भौगोलिक भौगोलिक स्थिति 2303 से $30^0$12′ उत्तरी अक्षांशों एवं $69^0$30 से $78^0$17′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य है, राजस्थान भारत का प्रथम वृहद्तम राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो सम्पूर्ण राष्ट्र के क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है इस राज्य का आकार एक विषमकोण समचतुर्भुज अथवा रोबस के समान पतंगाकार है, जिसकी पूर्व से पश्चिम लम्बाई 850 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण चौड़ाई 784 किलोमिटर है। इस राज्य की सम्पूर्ण स्थलीय सीमा की लम्बाई 5,290 किलोमीटर है। जिसमें से पाकिस्तान क साथ लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा लगभग 1,070 किलोमीटर है राजस्थान के श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेंर तथा बाडमेर जिलों को पाकिस्तान के बहावलपुर, खैरपुर एवं मीरपुर खास जिलों से पृथक करती है। इस राज्य के उत्तर में एवं उत्तर पूर्व में पंजाब, हरियाणा, पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण पूर्व में मध्यप्रदेश त्था दक्षिण–पश्चिम में गुजरात राज्य स्थित है। आन्तरिक दृष्टि से राज्स्थान के उत्तर में गंगाानगर जिला, दक्षिण में सिरोही, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा व झालावाड़ जिले है और पूर्व में भरतपुर, धोलपुर, सवाई माधोपुर व कोटा जिले है मध्य में ह्रदय के समान अजमेंर जिला है। क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से भारत के राज्यों में राजस्थान का स्थान प्रथम है।

अध्ययन प्रणाली–

अध्ययन के विस्तृत क्षेत्र को देखते हुए अध्ययन को जयपुर, अजमेंर, अलवर, जोधपुर व कोट जिले तक इसे सीमित करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन को सकारात्मक रूपता प्रदान करने से पूर्व स्थानीया लोगों के साथ तालमेंल स्थापित किया गया। औषधीय पादपों की अधिकतम जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न समय पर क्षेत्र का सर्वेक्षण किया तथा स्थानीय लोगों (अनुभवी पारंपरिक चिकित्सक, स्थानीय हर्बल दवा विक्रेता, वृद्व ग्रामीण, अनुभवी व्यक्तियों) से जानकारी एकत्र कर दस्तावेजीकरण कर निष्कर्ष निकाला गया। कुल 400 स्थानीय ग्रामीण निवासीयों का साक्षात्कार लिया गया। याद्दच्छिक रूप से चुने गये 200 पुरूष और 200 महिलायें थी। स्थानीय भाषा में साक्षात्कार लिया गया व परम्परागत स्थानिय चिकित्सकों की सहायता से अवलोकन कर पौधों की पहचान की गई । एक संरचित प्रश्नावली की सरचना के माध्यम से तथ्यों का सग्रंह किया गया। औषधीय पौधों के बारे स्थानीय लोगों से प्राप्त जानकारी के आधार पर स्थानीय नाम, बीमारी के ईलाज में काम आने वाले पौधे के हिस्से आदि के बारे में जानकारी भरी गई।

एकत्रित किये गए तथ्यों से विभिन्न परिवारों के पौधों की सूची उनके पांरपरिक उपयोग के साथ उपयोग किए गए पौधे के भाग, का सग्रंह, परिवार का नाम आदि को लिखा गया।

परिकल्पनाः–

1. राजस्थान में ं औषधीय पादप की खेती की विपुल संभावनाए है।
2. औषधीय पादपों के महत्व व गुण को देखते हुए क्षेत्र का विकास संभव है।
3. औषधीय पादपों की खेती के प्रति रूझान अन्य फसलों की अपेक्षा बढा है।

उद्देश्य–

1. राजस्थान में औषधीय पादपों की कृषि की संभावना व आवश्यकताओं का विश्लेषण करना।

2. राजस्थान में औषधीय पादपों की कृषि के लिए सरकारी व गैर सरकारी सगठनों द्वारा किये जा रहें प्रयासों का विश्लेषण करना।
3. राजस्थान में वर्तमान समय में औषधीय पादपों की कृषि पर आधारित उद्योगों के विकास हेतु प्रयास करना।

राजस्थान के मरूस्थलीय क्षेत्र के प्रमुख औषधीय पादप

मरूस्थलीय क्षेत्र की वनस्पतिया

1	गोखरू	Adhatoda zeylanica	गुडखुल
2	ब्रजदंती	Barleria prionitis	झिण्टी
3	मदार	Calotropis procera	सफेद आक
4	कैर	Capparis deciduas	करीर
5	बालसम	Impatiens balsamina	गुल महेंदी
6	छत्तिनाशी	Lantana indica	पंचफूली
7	महेंदी	Lawsonia inermis	महेंदी
8	खींप	Leptadenia pyrotechnica	खीप
9	बेल	Sarcostemma viminale	खीर खम्प
10	भुरत भूरत	Cenchrus biflorous	भुरत–भूरत
11	धामना,बाईबा	Cenchrus ciliar	कुसा,धामनियों
12	बथुआ	Chenopodium albu	बथुआ
13	जंगली मकड़ी का फुल	Cleome gyanand	जंगली मकड़ी का फूल
14	हुर हूर	Cleome viscera	मकड़ी का फूल
15	बड़ी दुधी	Euphorbia hirta	बड़ी दुधी
16	सेहुंड	Euphorbia neriifol	डंडा थौर
17	बला	Indigofera cordifolia	बला
18	चिरी धास	Mollugo cerviana	पर्पट
19	काली तुलसी	Occimum americanum	जगंली तुलसी
20	तिलकुल	Pedalium murex	बड़ा गोखरू
21	मकोय	Physalis minim	जगंली टमाटर
22	दुधि	Sonchus aspe	दुधि
23	लाजवंती	Sida ovata	छुईमुई
24	छोटी कंटकारी	Solatium surattens	भैटकटैया
25	सरफोका	Tephrosia purpure	शरपुंखा
26	गोक्षुर,त्रिकंटक	Tribulus terrestri	गुडखुल
27	अश्वगंधा	Verbesina enceliode	अश्वगंधा
28	बाईबा	Cenenrus ciliari	भैस धास
29	हुरहुर पीत	Cleome viscera	बागरा
30	बहुफली	Corchorus depressu	बहुपली
31	फालसा,जगंली जुट	Corchorus triden	कड़वा पात
32	आर्तगल	Xanthium indicum	छोटा धतुरा
33	शिरीष	Albizia lebbek	सरस
34	नीम	Azadirachta indica	नीम
35	अमलतास	Cassiafistul	अमलतास
36	अकौआ	Calotropis procera	मदार
37	कैर	Capparis deciduas	करीर
38	गुल महेंदी	Impatiens balsamina	बालसम
39	कनेर	Nerium indicum	कुनेल
40	श्वेता वासुका	Adhatoda zeylanica	अडुसा
41	पंचफुली	Lantana indica	छत्तियानाशी
42	महेंदी	Lawsonia inermis	महेंदी
43	खीप	Leptadenia pyrotechnica	खीप
44	कनेर	Nerium indicum	कुनेल
45	भैस धास	Cenchrus ciliaris	भैस धास
46	कडुकोस्टा	Corchorus tridens	कडवापात
47	सेहुंड	Euphorbia neriifolia	थुहर
48	कंटकारी	Solarium surattense	कटंकारी
49	आर्तगल	Xanthium indicum	संखाहुली
50	धामन	Cenchrus ciliaris	बाईबा

राजस्थान में भारत का 11 प्रतिशत भू–भाग आता है तथा 9.5 प्रतिशत राजस्थान का भू–भाग अंकित वन क्षेत्र है। राजस्थान का 7 प्रतिशत भूभाग वृक्ष तथा वन आच्छदित है, राजस्थान में इसबगोल, अश्वगंधा, सोनमुखी तथा मेंहदी मुख्यतः उगाये जाते है लेकिन बहुत से पादप वन क्षेत्रों से एकत्रित किये जाते है। राजस्थान के मरूस्थलीय भाग में 682 औषधीय पौधे है, इनमें से 12 पादपों का सर्वे किया गया लेकिन फिर भी 48.17 प्रतिशत कृषि क्षेत्र में से 0.08 प्रतिशत व 1 प्रतिशत भू भाग ही औषधीय पादपों के लिए उपयुक्त पाया गया है। आयुर्वेद निदेशालय की सूची में 450 आयुर्वेदिक रासयनशालायें राजस्थान में है तथा राष्ट्रीय औषधि पादप में 2 प्रतिशत के आसपास है। राजस्थान में अश्वगंधा, गोखरू, टुकमठिया, नागौरी असकन्द, बैर तथा धतूरा का निर्यात राजसथान से प्रमुख रूप किया जाता है।

राजस्थान में पायी जाने वाली औषधीय फसलों में सीताफल, सत्यानाशी, कैर कोलीकन्द, रती, सालपर्णी, कौच, कंरज, कुमठा, बहेडा, मकखिनया, जामुन, कचरी, शिवलिगीं, भृगंराज, सहदेवी, तेदू, मकोई, ब्रम्ही, द्रोणपुष्पी, पुर्णनवा, चिरचिरा, चौलाई वथुआ, रजनजोत, जमालगोटा, स्थानीय रूप से उपलब्ध है।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में पायी जाने वाले तथा उगायें जाने वाले पौध

संख्या	प्रक्षेप	जिले	औषधीय पौधे उगाये जाने वाले
1	पूर्वी राजस्थान	अलवर, भरतपुर, धोलपुर, दौसा, करोली	ग्वारपाठा, सतावरी, ऑवला बेल, अश्वगंधा, तुलसी, रतनजोत, गिलोय, कोच पीपल, गुंडमार, भूआंवला,
2	पश्चिमी राजस्थान	बीकानेर, जैसलमेंर, जोधपुर, बाडमेंर	ईसबगोल, ग्वारपाठा, कौच गिलोय, तुलसी, भूऑवला, गुडमार
3	उत्तरी राजस्थान	श्रीगंगानगर,हनुमानगढ, चुरू, झुझनू	ग्वारपाठा, शतावरी, गुगल अश्वगंधा, रतनजोत, ऑवल तुलसी, लेमनग्रास
4	दक्षिण पूर्वी राजस्थान	कोटा, बूंदी, बारा, झालावाड़, टोक, सवाईमाधोपुर	अश्वगंधा, आवला, सफेद मुसली, सर्पगंधा, कौच, कालमेध, लेमनग्रास तुलसी, गिलोय
5	दक्षिण राजस्थान	राजसमंद, चित्तोड़, भिलवाड़ा, उदयपुर, बासवाड़ा, जालोर सिरोही, डूगरपूर	सफेद मूसली, सतावरी, कौच, कालीहाड़ी, मसकन्द, रतनजोत, तुलसी, पीपली, भूआवला, गुडमार, जापानी पुदीना
6	मध्य राजस्थान	जयपुर, अजमेंर, सीकर, नागोर, पाली	आंवला, भूआंवला, तुलसी ग्वारपाठा, अश्वगंधा लेमनग्रास, अश्वगंधा, गिलोय

वन से प्राप्त औषधीय पौधे की सगणना व मूल्याकन सही रूप से अभी तक नहीं हुआ है, आज भी अध्ययन सर्वेक्षण काष्ठीय उत्पाद पर ही सीमित है, और अकाष्ठीय वन उत्पाद व सर्वेक्षण लगभग ना के बराबर है जब तक सही से वन औषधीय का सर्वेक्षण पुर्नजनन क्षमता दोहन का स्वरूप व प्रर्वधन इत्यादि की जानकारी नही होती तब तक हम इसका उपयोग नहीं कर पायेगें।

निष्कर्ष–

अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राजस्थान का क्षेत्र औषधीय पादपो से भरपूर है जिसका सही ढंग से पोषण किया जाए तो यहाँ के लोगों के लिए आय का एक बेहतर स्त्रोत बन सकता है। यहाँ अनेक प्रकार की व्यावसायिक औषधीय पायी जाती जैसे शतवारी, रेसमोसस वाइल्ड, एडहाटोड जेलेनिका मेंडिसन, सिदा ओवाटा फोर्सस्क, सोलनम सुरैटेंस बर्म आदि है, जिनका उपयोग अनेक प्रकार की व्याधीयों के उपचार के लिए किया जाता हैं 80 प्रतीशत ग्रामीण लोक चिकत्सीय प्रणाली पर अपने प्राथमिक स्वास्थ्य की देखभाल के लिए निर्भर है। औषधीय पादपों के गुण व महत्व को देखते हुए वर्तमान समय में राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय बजार मे औषधीय पादपों की मांग बढने लगी है जिस कारण क्षेत्र के किसानों के इन फसलों के प्रति रूझान बढने लगा है। आवश्यकता यह है कि किसानों को इन औषधीय पादपों की खेती के सही तरीका का ज्ञान सरकार व स्वंय सेवी संस्था द्वारा प्रदान किया जाए और उन के द्वारा इन फसलों का व्यवसायिक रूप से उत्पादन शुरू किया गया है जिसका परिणाम यह निकलेगा कि किसानों की आय मे वृद्वि के साथ–साथ क्षेत्र का विकास भी संभव होगा किन्तु चितां का विषय यह है कि अज्ञानता वंश अत्यधिक दोहन के कारण औषधीय पादपों का अस्त्पित्व धीरे–धीरे विलुप्त हो होता जा रहा है कई प्रजातीयों का अस्तित्तव खतरे में है अतः इनके सरक्षण के लिए सतत कदम उठाने आवश्यक है नहीं तो हम अपने परंपरागत ज्ञान से वंचित हो जाएगें।

***व्याख्याता**
भूगोल विभाग
राजकीय महाविद्यालय, चिमनपुरा (जयपुर)

संदर्भ सूची–

1. मिश्र आर.डी. 1974 ''भारतीय पादप पारिस्थितिकी विज्ञान''। राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर।
2. सेन डी.एन 1974 ''पादप कार्यिकी, पारिस्थितिकी एवं आर्थिक वनस्पतिकी''। राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर।
3. दुबे राजेंद्र प्रसाद 1980 ''ओरछा परिक्षेत्र की वन पादप जातियाँ''। अप्रकाषित थीसिस जीवाजी वि.वि. ग्वालि
4. सिंह सविन्द्र 1990 ''पर्यावरण भूगोल''।प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद
5. नेगी डॉ.बी.एस 1997 ''संसाधन भूगोल''। एस.जे. पब्लिकेषन्स मेरठ।
6. सिंह डॉ. सविन्द्र 1999 ''पर्यावरण भूगोल''। प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद।
7. भूटिया रमेष कुमार 2007 ''वनस्पति औषध विज्ञान''। दया पब्लिकषिंग हाउस नई दिल्ली।
8. क्रियान्वयन निर्देषिका 2008, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड–स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार।
9. अनाम 2010 ''परिनगरीय खेती''। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली।